Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 13, Issue September 2022 | Impact Factor 5.004

निराला का विश्व प्रेम

सुनील पाटिल
प्रवक्ता, हिन्दीविभाग, द्वारका दास गोवर्धन दास वैष्णव महाविद्याल,अरुम्बाक्कम् – चेन्नै

सारांश

सूर्य कांत त्रिपाठी निराला मानवीय दृष्टिकोण से ओतप्रोत पौरुषकाव्य के प्रतिनिधि कवि हैं। छायावादी कवियों में अपने विद्रोहात्मक एवं विश्वप्रेमी व्यक्तित्व के कारण वे अलग ही दिखते हैं उनका हृदय केबल परिवार या राष्ट्र की चार दीवारों तक सीमित रहने वाला नहीं है वह समस्त विश्व के अपने में समेटे चलने वाला है। निराला मानवतावाद या विश्वप्रेम अद्वैतवादी प्रेम वेदान्त पर आधारित है। निरालाजी बाधा या बंधन से विहीन विशुद्ध मानवता पर विश्वाश रखते हैं। निरालाजी के समक्ष मानव केवल मानव हैं, उसमें वर्णाश्रम, जाति-रंगगत भेदभावों के लिए कोई स्थान नहीं हैं। निरालाजी ने इस प्रकार मानव-जीवन के प्राकृतिक विकास के रोके रहने वाली सामाजिक, सांप्रदायिक, धार्मिक आदि संकीर्णताओं को तोड डालने की घोषणा की हैं। मानव मन को सारी सीमाओं से दूर दिगन्त तक व्याप्त करने की सार्वभौम भावना निरालाजी की रचनाओं में सर्वत्र परिलक्षित होती हैं। निरालाजी की अनेक ऐसी कविताएं हैं जिनमें परम्परबद्ध धर्म की जर्जरित रूढियों पर प्रहार किया हैं। धर्म का नाम लेकर चलने वाले धार्मिक धींगो तथा अमानुषिक कृत्यों पर उन्होनें व्यंग कसे हैं। निष्कर्षतः निरालाजी का मानवप्रेम या विश्वप्रेम पृथ्वी से आकाश तक के समस्त ब्रह्माण्ड में परिव्याप्त हैं। उनकी कामना केवल मानव-कल्याण की ही नहीं हैं वरन सारे चराचर जगत् के कल्याण की हैं। उनका विश्वप्रेम इतना भास्वर है कि अपने प्रकाश में सबको उज्ज्वल रूप प्रदान किये ले चलता हैं।

प्रतिपाद्यविषय-

सूर्य कांत त्रिपाठी निराला मानवीय दृष्टिकोण से ओतप्रोत पौरुषकाव्य के प्रतिनिधि कवि हैं। छायावादी कवियों में अपने विद्रोहात्मक एवं विश्वप्रेमी व्यक्तित्व के कारण वे अलग ही दिखते हैं उनका हृदय केबल परिवार या राष्ट्र की चार दीवारों तक सीमित रहने वाला नहीं है वह समस्त विश्व के अपने में समेटे चलने वाला है। निराला जी की आत्मा वस्तुतः सारे विश्व में व्याप्त है आत्म प्रसार के सभी क्षेत्रों में संकीर्ण धारणा एवं प्रवृत्तियों का विरोध

किया। निराला जी ने एक ऐसे विश्व समाज की कल्पना की है जिसमें रूढ़ियों की सीमा नहीं होगी, जाति वर्ण धर्म राष्ट्र संकीर्णता का अभाव होगा और जहां मानव मानव सम होगा तथा वह प्रेम करुणा सहानुभूति आदि उदात्त गुणों से मंडित होगा । उनकी यह विराट कामना इन पंक्तियों में देखी जा सकती है।

"गरज गरज घन अंधकार में गा अपने संगीत
बंधु वे बाधा बन्ध विहीन
आंखों में नवजीवन की तू अंजन लगा पुनीत
बिखर झर जाने दे प्राचीन" ।।[1]

निराला जी सदियों से जकड़े हुए हृदय कपट को कठिना तारों से खोलकर उसमें नव्य विराट का स्वागत कर रहे हैं निराला जी का विराट केबल भारत तक या धरती तक ही सीमित नहीं है बल्कि अनंत आकाश को भी समेट कर चलने वाला है उसमें किसी भी संकीर्णता के लिए थार नहीं है जैसे

ताल ताल शौर्य सदियों के जकड़े हृदय कपाट
खोल देकर कर कठिन प्रहार
आये अभ्यन्तर संयत चरणों से नव्य विराट
करे दर्शन पाये आभार।
किरणों के गति से आ, आ तू, गा तू गौरव-गान
एक कर दे पृथ्वी आकाश"।। [2]

निराला मानवतावाद या विश्वप्रेम अद्वैतवादी प्रेम वेदान्त पर आधारित है । निरालाजी बाधा या बंधन से विहीन विशुद्ध मानवता पर विश्वाश रखते हैं। वहां न धर्म का भेद रहता हैं, न किसी और प्रकार का भेद ही, केवल मानवता ही विद्यमान हैं। निरालाजी विश्वमानव के जीवन के सभी पक्षों में निर्बाध तथा स्वच्छन्द विकास के अभिलाषी हैं, वे उसके मार्ग में भावना नियम आदि किसी भी प्रकार के रूढि-बंधन के पक्ष में नहीं हैं। जीवन में सत्य, सुन्दर एवं शिव की पुनः स्थापना करना चाहते हैं और कहते हैं कि सभी बंधनों तथा भ्रान्तियों को तोड दिया जाय ताकि मानव को उन्मुक्त अनन्त में श्वास लेने का अवसर मिले। जैसे –

PURVA MIMAANSA

"पुनः सत्य-सुन्दरशिव की संवारती, उर उर की बनो आरती।
भ्रान्तों की निश्चल ध्रुव –तारा, तोडो तोडो तोडो कारा" ।। [3]

मानव के पथ पर जाति-वर्ण देश धर्मगत भेदों के कण्टक बिछे रहते हैं और उसकी विकासोन्मुखी गति को रोक देते हैं। वे विविध प्रकार के उन भेदभावों के आवरणों को हटाकर शुद्ध चैतन्य के विकास के लिए पथ प्रशस्त करना चाहते हैं। उनके विचार में इंग्लैण्ड के सम्राट् एडवर्ड अष्टम का सिंहासन-त्याग अपूर्व था, सुद्ध मानवतावादी भूमिका पर था और उस कारण उन्होंने उस् आंग्रेज सम्राट् के महान् त्याग की प्रशस्ती गायी। उस कविता का शीर्षक हैं " सम्राट् एडवर्ड अष्टम के प्रति" सम्राट् ने अमेरिका के एक सामान्य विधवा नारी के स्नेह के लिए धन एवं मान के जर्जर बंधनों को तोडकर समस्त सुख भोगों का त्याग कर दिया। निरालाजी उनके त्याग का विवरण इस प्रकार देते हैं–

"वैभव विशाल, साम्राज्य- सप्तसागर-तरंग –दलदत्त माल
हैं सूर्य नक्षत्र मस्तक पर सदा विराजित लेकर- आतपत्र
विच्छुरित छटा. जल स्थल, नभ में विजयिनी वाहिनी...। [4]

निरालाजी उसमें विश्वसंकृति का का एक नया परिवेश देखते हैं। वे इसमें उदात्त मानवतावादी स्वर को सुनते हैं। निरालाजी ने जहां एक ओर चेतन मानव के मंगल का विचार किया हैं वही दूसरी ओर वे पशु पक्षी आदि के नवजीवन प्रदान करने वाले बादल से प्रार्थना करते हैं कि वह जीवन में शांति तथा शीतलता व्याप्त कर दे। वृक्ष की छाया से आवृत तट पर निर्जन निर्जन एकान्त में विकसित कलियों को जलकण चूमें, साथ शीतल समीर बहे, निरालाजी का यह विराट् विश्वप्रेम उनकी कविता "विनय" में इस प्रकार अंकित हैं–

"पथ पर मेरा जीवन भर दो, बादल हे अनन्त अंबर के।
बरस सलील गतिउर्मिल कर दो।
तट हो विपट छाह के, निर्जन सस्मित कलिदल चर्वित जलकण
शीतल-शीतल बहे समीरण , कूजे द्रुम विहंगगण वर दो" ।। [5]

निरालाजी विविधप्रकार की विषमताओं से जर्जर मानव समाज को देखा तो अत्यन्त व्यथित हुए। उन्होंने नरक के त्रासक दुःखो से धरति को पूरित पाया। दैहिक एवं मानसिक व्याधियों से मानव समुदाय को पीडित देखा तो करुणध्वनि में शक्ति माता

PURVA MIMAANSA

से प्रार्थना करने लगे –

"मां अपने आलोक निखारो, नर को नरक त्रास से वारो
विपुल दिशावधि शून्य वर्गजन, व्याधि शयन जर्जर मानव मन
ज्ञान गगन से निर्जन जीवन करुणा करो उतारो तारो" ।। [6]

निरालाजी के समक्ष मानव केवल मानव हैं, उसमें वर्णाश्रम, जाति-रंगगत भेदभावों के लिए कोई स्थान नहीं हैं। अतः वे चाहते हैं कि मानव का सारा अभिमान , संशय आदि दूर हो जाये, वर्णाश्रमगत महाभारत भी नष्ट हो जाय और सब सदाशयता एवम् निरामयता के साथ जीवन चलाये। यथा –

"दूर हो अभिमान संशय, वर्ण आश्रमगत महाशय
जाति-जीवन हो निरामय, वह सदाशयता प्रखर हो"।। [7]

विश्व एकता के पथ पर बाधा डालने वाले वर्णभेद आदि का निरालीजी ने अनेक बार खण्डन किया हैं। मानव-जीवन के ऊपर से स्वार्थ मोह आदि का अन्धकार मिट जाये, वर्णभेद दूर हो, शांति सर्वत्र छा जाये, अशान्ति ना रहे और विश्व जीवन का वैविध्य एकता में लुप्त हो जाय, यही विश्वप्रेम निरालाजी की कामना हैं। आशावादी कवि इस प्रकार अपनी कान्तदर्शिता को अभिव्यक्त करते हैं –

"जननी मोहमयी तमिस्रा दूर मेरी हो गयी हैं –
विश्व जीवन की विविधता एकता में खो गयी हैं।
देखता हूं यहां, काले-लाल-पीले-श्वेत जन में
शान्ति की रेखा खिचीं हैं, क्रान्ति कृष्णा रो गयी हैं" ।। [8]

निरालाजी ने इस प्रकार मानव-जीवन के प्राकृतिक विकास के रोके रहने वाली सामाजिक, सांप्रदायिक, धार्मिक आदि संकीर्णताओं को तोड डालने की घोषणा की हैं। मानव मन को सारी सीमाओं से दूर दिगन्त तक व्याप्त करने की सार्वभौम भावना निरालाजी की रचनाओं में सर्वत्र परिलक्षित होती हैं।

निरालाजी ने अब भारतीय समाज में विविध बंधनों में बद्ध तथा अशिक्षित एवं पराधीन दशा में पडी हुयी नारी को देखा तो मुक्ति का का उनका नारा उस क्षेत्र में भी गूंजने

PURVA MIMAANSA

लगा। निरालाजी का मानव प्रेम कृत्रिम सीमाओं का कट्टर विरोधी हैं। अतः विद्रोही प्रवृत्ति उस क्षेत्र को भी अछूता नहीं छोडती। अतः उनका कहना हैं कि "आज सभी शिक्षित मनुष्य जानते हैं, भारत के अधःपतन का मुख्य कारण नारी जाति का पीछे रह जाना हैं, वह जीवन-संग्राम में पुरुष का साथ नहीं दे सकती, पहले से ऐसी निरवलंब कर दी जाती हैं कि उसमें कोई क्रियाशीलता नहीं रह जाती। पुरुष के न रहने पर सहारे के बिना तरह तरह की तकलीफें झेलती हुई वह कभी दूसरे धर्म को स्वीकार कर लेती हैं, आदि आदि"[9]

निरालाजी का विश्वप्रेम "भारतीय विश्व-बन्धुत्व वाले शाश्वत सिद्धान्त से भिन्न नहीं हैं। इसके मूल में भी उनका अदवैतवादी दृष्टिकोण ही आधार बना रहता हैं। निरालाजी ससीम असीम का, रूप में अरूप का, लघु में विराट् का, व्यष्टि में समष्टि चेतना का जो अनुभव करते हिअ उसकी भूमिका यह विश्व-प्रेम ही हैं। चराचर जगत् के प्रति उनका अविरल स्नेह ही हैं। निरालाजी का विश्वप्रेम के समक्ष अधिवास को भी महत्व नही देते। नर सेवा में ही वे अधिवास को पाते हैं। उन्होनें किसी को दुखी पाया और उसके दुःख पाया और और उसके दुःख की छाया उनके अंतर में पडी तो उनमें वेदना की लहरे उमडने लगी और उन्होंने उसके निकट दौडकर जाकर उसे गले लगा लिया। तब उनका अटल विश्वास इस प्रकार हैं –

"उसकी अश्रुभरी आंखो पर मेरे करुणांचल का स्पर्श
करता मेरी प्रगति अनन्त किन्तु तो भी मैं नहीं विमर्श,
छूटता हैं यद्यपि अधिवास, किन्तु फिर भी न मुझे कुछ त्रास"।। [10]

उनका प्रेम से मंडित हृदय यह कामना करता हैं कि सारे जग में स्पर्धा की प्रवृत्ति दूर हो जाए। स्वार्थ के कारण चेतनाहीन होकर् रहने वाले ,मानब में फिर से चेतना फले, और सभी प्रकार के दुःखो एवं पापों से मानव की रक्षा हो जाए। जैसे –

"सार्थक करो प्राण, जननि!
दुःख अवनि को दुरित से दो त्राण !
स्पर्शान्ध जन गात्र जर्जर अहोरात्र
शेष जीवन मात्र कुड्मल गताघ्राण ![11]
चेतनाहीन मन मानता स्वार्थ धन,

PURVA MIMAANSA

दृष्ट ज्यौं हो सुमन, छिद्र शत तनु-यान" ।। [12]

निरालाजी की अनेक ऐसी कविताएं हैं जिनमें परम्परबद्ध धर्म की जर्जरित रूढियों पर प्रहार किया हैं। धर्म का नाम लेकर चलने वाले धार्मिक धींगो तथा अमानुषिक कृत्यों पर उन्होनें व्यंग कसे हैं। जिसे उन्होनें अपनी कविता "दान" में इस प्रकार प्रस्तुत किया हैं।

"विप्रवर स्नान कर चढां सलिल, शिव पर दूर्वादल तण्डुल तिल

लेकर झोली आये ऊपर, देखकर चले तत्पर वानर ।

झोली से पुए निकाल लिए, देखा भी नही

उधर फिरकर, जिस ओर रहा वह, भिक्षु इतर

चिल्लाया किया दूर दानव, बोला मैं धन्य श्रेष्ठ मानव।। [13]

यह दृश्य देखकर कवि का संवेदनशील हृदय वेदना से भर उठता हैं। उनकी आत्मा तर-तार हो उठती हैं। समाज के प्रति उनका य आक्रोश भिक्षुक कविता में भी मुखरित हो हुआ हैं। जिसमें कवि ने एक भिखारी औरौसके दो बच्चों क एक ऐसा वेदना से भरा करुणशब्दचित्र खीचा हैं, जो हमारे हृदय को झकझोर देती हैं और उनके विश्वप्रेमी दृष्टिकोण को हमारे सामने रखती हैं–

"वह आता दो टूक कलेजे के करता,

पछताता पथ पर आता ।

पेट-पीठ दोनो मिलकर हैं एक,

चल रहा लकुडियाटेक,

मुट्ठी भर दाने को, भुख मिटाने को,

मुंह कटी पुरानी झोली को फैलाता"।। [14]

निराला वास्तव में मानवतावादी कवि हैं। उनका जीवन कठोर संघर्ष से भरे मनुष्य का जीवन हैं। उनकी कविताओं में संघर्ष करता हुआ यह आदमी पराजय को स्वीकार नहीं करता । कवि के व्यक्तित्व का विश्वास और् कर्म करने की शक्ति उन्हें अपराजेय बना देती हैं। जैसे –

"अभी न होगा मेरा अंतत !

मेरे जीवन का हैं प्रथम चरण,

PURVA MIMAANSA

उसमें कहां मृत्यु हैं जीवन ही जीवन"।। [15]

निष्कर्षतः निरालाजी का मानवप्रेम या विश्वप्रेम पृथ्वी से आकाश तक के समस्त ब्रह्माण्ड में परिव्याप्त हैं। उनकी कामना केवल मानव-कल्याण की ही नहीं हैं वरन सारे चराचर जगत् के कल्याण की हैं। उनका विश्वप्रेम इतना भास्वर है कि अपने प्रकाश में सबको उज्ज्वल रूप प्रदान किये ले चलता हैं।

ग्रन्थसूची

1. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निरालाकृत-अनामिका (काव्यसंग्रह) उद्बोधन, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2004, पृ. स. 67।
2. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निरालाकृत-अनामिका (काव्यसंग्रह) उद्बोधन, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2004, पृ. स. 8।
3. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निरालाकृत-अनामिका (काव्यसंग्रह) मुक्ति, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2004, पृ. स. 137।
4. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निरालाकृत-अनामिका (काव्यसंग्रह) उद्बोधन, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2004, पृ. स. 18।
5. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निरालाकृत-अनामिका (काव्यसंग्रह)) विनय, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2004, पृ. स. 81।
6. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निरालाकृत-अनामिका (काव्यसंग्रह) अर्चना, इलाहाबाद: राजकमल प्रकाशन, 2015, पृ. स. 108।
7. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निरालाकृत-अनामिका (काव्यसंग्रह), इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2015, पृ. स. 16।
8. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निरालाकृत-अनामिका (काव्यसंग्रह), इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2015, पृ. स. 16।
९. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निरालाकृत-प्रबंध प्रतिमा (निबंध संग्रह), नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 1993, पृ.स. 60।
10. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला परिमल अधिवास, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ.स. 99।
11. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला गीतिका गीत संख्या 53, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।

PURVA MIMAANSA

12. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निरालाकृत-अनामिका (काव्यसंग्रह) दान, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2004, पृ. स. 22।
13. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला परिमल भिक्षुक, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ.स. 27।
14. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला परिमल, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ.स. 93।
15. सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला परिमल, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, पृ.स. 94।

PURVA MIMAANSA